

परमेश्वर का उपहार भोजन

तेन्रीक्यों की संस्थिपिका आयासामा, मिकी नाकायामा ने एसा सिखाया गया है कि 'साग का एक पत्त भी बेकार न कीजिए'।

इसका मतलब न केवल बचन सद्गुण है, अपितु परमेश्वर जनक-जननी के दैवी संरक्षण के रूप में दी गई सभी चीज़ों को कभी बेकार नहीं जाकर कृतज्ञतार्पूवक ग्रहण करना चाहिए।

फिर ओयासामाने कहा कि मछली खाते समय 'स्वादिष्ट, स्वादिष्ट कहकर खाइए'।

मछली और जानवर उनके एक एक अनमोल जीवन को मानव के लिए अर्पित कर देते हैं।

उनका स्वाद के बारे में शिकायत करने से न केवल उनके जीवन की उपेक्षा करता है, अपितु परमेश्वर जनक-जननी के मन को भी अनदेखी करता है।

परमेश्वर का उपहार भोजन

तेन्रीक्यों की संस्थिपिका आयासामा, मिकी नाकायामा ने एसा सिखाया गया है कि 'साग का एक पत्त भी बेकार न कीजिए'।

इसका मतलब न केवल बचन सद्गुण है, अपितु परमेश्वर जनक-जननी के दैवी संरक्षण के रूप में दी गई सभी चीज़ों को कभी बेकार नहीं जाकर कृतज्ञतार्पूवक ग्रहण करना चाहिए।

फिर ओयासामाने कहा कि मछली खाते समय 'स्वादिष्ट, स्वादिष्ट कहकर खाइए'।

मछली और जानवर उनके एक एक अनमोल जीवन को मानव के लिए अर्पित कर देते हैं।

उनका स्वाद के बारे में शिकायत करने से न केवल उनके जीवन की उपेक्षा करता है, अपितु परमेश्वर जनक-जननी के मन को भी अनदेखी करता है।

तेन्नीक्यो में भोजन के बारे में कोई निषेध और धर्मादेश नहीं है।

रुद्धिवादी रवैया से सकारात्मक और खुसी के साथ जीने का रवैया ज्यादा ज़रूरी है।

सब परमेश्वर जनक—जननी द्वारा प्रदान किया जाता है।

इसलिए कृतज्ञतापूर्वक सब को ग्रहन करना चाहिए। संपूर्ण खाद्यान्न दैवी अनुकंपा है। इससे हम परमेश्वर जनक—जननी की संरक्षण को दैनिक रूप में अनुभूत कर सकते हैं।

यही तेन्नीक्यो अनुयायी के लिए सबसे बड़ा आनंद है।

तेन्नीक्यो में भोजन के बारे में कोई निषेध और धर्मादेश नहीं है।

रुद्धिवादी रवैया से सकारात्मक और खुसी के साथ जीने का रवैया ज्यादा ज़रूरी है।

सब परमेश्वर जनक—जननी द्वारा प्रदान किया जाता है।

इसलिए कृतज्ञतापूर्वक सब को ग्रहन करना चाहिए।

संपूर्ण खाद्यान्न दैवी अनुकंपा है। इससे हम परमेश्वर जनक—जननी की संरक्षण को दैनिक रूप में अनुभूत कर सकते हैं।

यही तेन्नीक्यो अनुयायी के लिए सबसे बड़ा आनंद है।